रामकलेवा

प्रकाशक

पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,

भार्गव भूषण प्रेस, बनारस मूल्य ।)

॥ श्री ॥

रामकलेवा

प्रधान वितरक—

श्री गंगा पुस्तकालय,

गायघाट, बनारस

श्रीगणेशाय नमः

रामकलेवा

छन्द

भोर भये अपने कुमार को जनक बेगि बुलवाये।
सुनिके पितु सँदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये॥
सादर किये प्रनाम चरण छुइ लखि बोले मिथिलेसू।
गमनहु तात तुरत जनवासे जहँ श्री अवध नरेसू॥
बिनय सुनाइ राय दशरथ सों पाय रजाय सचेतू।
आनहु चारिउ राजकुमारहिं करन कलेऊ हेतू॥
यह सुनि शीशनाय लक्ष्मीनिधि भरि उर मोद उमंगा।
सखन समेत मंद हँसि गमने चढ़ि चढ़ि चपल तुरंगा॥
कलनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे।
मृदु मुसुकात बतात परस्पर पहुँचि गये जनवासे॥
सखन सहित तहँ उतरि तुरंग ते मिथिलापतिके बारे।

चारिउ सुत युत अवधराज को सादर जाय जुहारे ॥
अतिसुखनिधिलक्ष्मीनिधिकोलखिसखनसहितसतकारे।
रघुकुलदीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ॥
तेहिक्षण सानुजनिरखिरामछबि सखनसहित सुखमाने।
लक्ष्मीनिधि मुख दरस पाइके रामहु नैन जुड़ाने ॥
तब श्रीनिधि करजोरि भूप सों कोमल बैन उचारे ।
करन कलेऊ हेत पठावो चारिहु राजदुलारे ॥
सुनि मृदु बचन प्रेम रस साने दसरथ मृदु मुसुकाने ।
चारिहु कुँवर बुलाय बेगही बिदा किये सुखसाने ॥
जनक नगर की जानि तयारी सेवक सब सुख पागे ।
निज निज प्रभुहिं सँवारन लागे लै भूषन बरबागे ॥
रघुनन्दन सिर पाग जरकसी लसी त्रिभंगी बाँधी ।
तिमि नौरंगी झुकी कलंगी रुचिरुचि पेचनि साधी ॥
कनक कलितअतिललितमनिनकी मंजुलमौरबिराजी ।
सिंधुरमनि के सजे सेहरा जेहि होते मन राजी ॥
ताके कोर कोर चहुँ ओरन लागि रतन की पाँती ।
जगमगजोतिहोतचहुँदिसितेलखि सखियाँ न अघाती ॥

कुण्डल लोलें हलें कपोलैं लगी अमोलैं मोती।
जेबदार जगमगाह जराऊ जुगल जँजीरन जोती ॥
जालिम जोरी जुलफैं जहरी जुवतिन जोबन हारी।
छूटीं अलकैं दुहुँ दिसि झलकैं मनहुँ मैन तरवारी ॥
रतनारी कारी कजरारी अति अनियारी आँखें।
रसवारी बरवस बसकारी प्यारी आनन राखें ॥
अति अवरंगी रतिरसरंगी चढ़ी त्रिभंगी भौंहैं।
मनहुँ मदनके जुग धनु सोहैं जिहि चाहैं सोइ मोहैं ॥
तिलक रसाल बिसाल भालपर किमि बरनौं छबिताकी।
जनु नवघन पर रीझ दामिनी नेक लियो थिरताकी ॥
अरुन अधर बिच दामिनि द्युतिवर दमकै दसनन पाँती।
सन्मुख मुखकर जेहिदिसि बोलै अजब छटाछहराती ॥
जगमगात अति श्यामगात जग्तारिन को है जामा।
ताके कोरकोर चहुँ ओरन जड़े रतन मनि श्रामा ॥
पीत सुफेटा सुछबि समेटा कमर लपेटा राजै।
नवल पटूकौ करन लटूकौ काँधे पटुका भ्राजै ॥
मनिमय कंकन सुखप्रद रंकन बंकन करबिच बाँधे।
जनु पुर जुवतिन मन जीतन को जंत्र बसीकर साँधे ॥

दोहा—बरनि सकै को रामको, अनुपम दूलह भेष।
जेहि लखि सिवसनकादि को, रहत न तनहिं सरेष॥

छन्द

इमि सजि अनुज सहित रघुनन्दन चारिहु राजदुलारे।
बढ़े उमंगन चढ़े तुरंगन अंगन बसन सँभारे॥
जे रघुबंशी कुँवर लाड़िले प्रभु कहँ प्राण पियारे।
चढ़े तुरंग संग तेउ गमने रामरंग मतवारे॥
बोले चोबदार लै नामन बिरदावली अलापैं।
चंचल चमर चलै दुहुँ दिसिते छत्र सखा सिर ढापैं॥
रामवाम दिसि श्रीलक्ष्मीनिधि सखन सहित तेउसोहैं।
चंचल बागे किये तुरिन को बातें करत हँसोहैं॥
जग बंदन जेहि नाम जाहिरो रघुनन्दन को बाजी।
ताको गुन छबि कहँ लौ बरणौं जोहि होत मन राजी॥
भूषित भूषन अंग अदूषन पूषन हय लखि लाजै।
चोटिन तनियाँ गुथी सुमनियाँ पगु पैंजनियाँ बाजैं॥
जड़ित जवाहिर जीन जड़ो कि जरबीली अति सोहैं।
पूजि पटाको छटा कहै को काम लटा मन मोहैं॥
ललित लगाम दाम बहुकेरी अंकित नाम बिराजै।

सुछबि उमंगी झुकी त्रिभंगी मनिन कलंगी छाजै ॥
जित रुख पावैं तित पहुँचावैं छन आवैं छन जावैं।
जमिर थिमर थिरकि भूमि पर गतिपग तिन दरसावैं॥
खीनी खट पीनी खुरथालें बँधी नवीनी नालें।
लेत उतालें सिंह उछालें करैं समुद्र इक फालें॥
धावत पावन पावत पीछू गरुड़हु गर्लव गँवावैं।
रघुनन्दन को बाजि लाड़िलो अनुपम कला दिखावैं॥
राम समुद मुद देत जनन को जापर भरत बिराजैं।
रघुनन्दन के दहिने दिसि सो चलत चपल गति साजैं॥
रोकत बागे अति रिसि रागे गरबित फुरकन लागे।
झमक झमाकी लै गति बाँकी दै झाँकी सुख पागे॥
कहुँ नभ जीवन सुरन झँकावै कहुँ महि मोद मचावै।
अवनीतें अरु आसमान लों जनु सोपान बनावै॥
फाँदत चंचल चारु चौकड़ी चपलाहू चख झापै।
भरत कुँवर को तुँरग रँगीलो बरनि जात कछु कापै॥
चंपा नाम चाल चटकीली जेहि पर रिपुहन भाये।
सब समाज के आगे निरतै मोर कुरंग लजाये॥
जौ कहुँ नेकहुँ हाथ उठावत कई हाथ उठ जातो।

बार बार चुचुकार दुलारत ताहू पै न जुड़ातो ॥
लक्खीघोड़ा लखन लाल को बाँको निपट चलाको ।
उड़ि उड़ि जात वायुमंडल को परत न पग महि ताको ॥
तरफराय उड़िजाय परत है लक्ष्मीनिधि हय पाहीं ।
उचित बिचारि हँसे रघुबंशी रामहिं मृदु मुसकाहीं ॥
तोप तुपक जूटै जहँ छूटै तहाँ जाय सो टूटै ।
रणरस घूटै गारिनि कूटै बीरन में यश लूटै ॥
फुलझरियासी झरत धरत पग करत अनेक तमासो ।
दुरकन मुरकन थरकन थिरकन वरनि जाय कहुकासो ॥
तकि तुरङ्ग की चंचलताई लखन कि देखि चढ़ाई ।
निमिवंसी रघुबंसी सिगरे ठगिसे रहे बिकाई ॥
राम आदि जे कुँवर लाड़िले तेउ लखि भरे उछाहैं ।
रीझि रीझि तहँ लषनलाल को बारहिं बार सराहैं ॥
इमिमगहोतबिलासबिबिधविधि बिपुल बाजनेबाजे ।
सुनत नकीब पुकार नगर तिय कढ़ि बैठीं दरवाजे ॥
कोउतियनिरखिबदनकीमहिमा अति सुखमहँसोपागी ।
भरी सनेह देह सुधि भूली रामरूप अनुरागी ॥
कोउ तिय देखि अतूला दूल्हा अति सनेह तनु भूला ।

फूला नैन मैल मन भूला लागि प्रीति को झूला ॥
कोउ घूँघट पट खोल सुन्दरी मणि मुँदरी लै पानी ।
देखत दूलह रूप रामको आनँद सिन्धु समानी ॥

दोहा०—कोउ सूरति लखि साँवरी, तोरति तृण सुखपाग ।
मधुरी मूरतिमैं पगी, निज मूरति सुख त्याग ॥

छन्द

कोउ रघुनंदन छवि बिलोकि कै बोली सुनुसखि बयना ।
राजकुँवर ये करन कलेऊ जात जनक के अयना ॥
इनको श्रीनिधि गये लिवाई आये चारिहु बेटा ।
रँगभीने रघुबंशी छैला दशरथ राज दुल्हेटा ॥
धनि यह भाग्य हमारो प्यारी निज भरि नैन निहारे ।
नतु दरसन दुर्लभ दूलह के रतिकूल प्रान पियारे ॥
भाग सोहाग आज भल पायो श्रीमिथिलेस की बेटी ।
सुन्दर श्याम माधुरी मूरतिनिजनिज भुज भर भेंटी ॥
बोली अपर सखी सुनु सजनी भलीबात बति आई ।
हमहुँ चलैं सब जनक महलको हँसिये इन्हैं हँसाई ॥
इमि मृदु बातें करत परसपर भई प्रेमबश बामा ।
सुनत जात मुसकात अनुज युत कृपासिंधु श्रीरामा ॥

तुरंग नचावत मन छबिछावत बाजत बिपुल नगारे ।
चोपदार जागरें अलापत जनक नगर प्रभु धारे ॥
द्वार समीप देखि अतिसुन्दर मनिमय चौक सँवारे ।
राजकुँवर रघुवंशिन के तहँ ठाढ़ भये मतवारे ॥
उत्तर जाय लहि सियामातु की नगर सुवासिननारी ।
कंचन कलस सजे सिर ऊपर पल्लव दीप सँवारी ॥
गावत मंगल गीत मनोहर कर ले कंचन थारी ।
परछन हेतु चलीं रघुवर को बहु आरती सँवारी ॥
जाय समीप निहारि रामछबि दृग आनँद जल बाढ़ी ।
छकितरहहिंवरबदनबिलोकति चकिति रही तहँ ठाढ़ी ॥
रामरूप रँगि गई रँगीली लखि दूलह सुख सारा ।
तन मन रह्यो सरेख न काहू करैं मंगलाचारा ॥
प्रेम पयोधि मगन सब प्यारी धरि पुनि धीरज भारी ।
परछन अली भलोबिधि कीन्हों रोकि बिलोचन बारी ॥
लक्ष्मीनिधि तब उतरि तुरँगते चारिउ कुँवर उतारे ।
पानि पकरि रघुनन्दनजी को भीतर महलसिधारे ॥
द्वीप द्वीप के जहँ महीप सब जनक समीप बिराजे ।
बैठे सभा सकल निमिबंसी सुत अंसी इव छाजे ॥

रघुनन्दन तहँ अनुज सखन युत सादर जाय जुहारे ।
देखत उठे सकल निमिवंसी जनक निकट बैठारे ॥
कर गजरा कजरा दृगमें सेहरायुत मौर बिराजी ।
दूलह वेष बिलोकि रामको भई सभा सब राजी ॥
तहँ कर कछु दरबार जनक ढिक दशरथ राज दुलारे ।
लैके राय रजाय नाय शिर सासु समीप सिधारे ॥
जहँ पिक बयनी सब सुख ऐनी बैठि सुनयना रानी ।
इन्द्रानी की कौन चलावे लखि रति रूप लुभानी ॥
चन्द्रमुखी चहुँ ओर बिराजे कोउ कर चमर चलावै ।
कोउ सखि देखि राम की शोभा आरति मंगल गावै ॥
तेहि छिन तहाँ गये रघुनन्दन मन फंदन बर बेषा ।
देखत उठीं सकल रनिवासैं रह्यो न तनुहिं सरेषा ॥
करि आरती वारि मनिभूषन सादर पाँव पखारे ।
चारि रङ्ग के चारि सिंहासन चारिहु बर बैठारे ॥
लखि छबि ऐना सासु सुनैना नैना पलक तजना ।
भूली चैना बोलि सकै ना कहत बनै ना बैना ॥
रामरूप रँगि रही रँगीली आँसू बह दृग जाहीं ।
तकि जाके रहीं तनक माहिं डोलै मन मुद माहीं ॥

इमि तहँ दसा बिलोकि सासु की राम गुनत मनमाहीं।
काह भयो यह आजु रानि को पूछत में सकुचाहीं ॥
चतुर सखी चित चरचि राम सों बोली मधुरी बानी।
यह तुम्हार गुन है सब लालन और न कछु उर आनी ॥
सुनत बचन यह तुरत धीर धरि जगी सुनैना रानी।
बार बार बहु लीन्ह बलैया चूमि कपोलन पानी ॥
माधुरि मूरति साँवलि सूरत तकि तृन तोरति रानी।
रीझि रीझि तहँ राम रूप पै बिनहीं मोल बिकानी ॥
पुनि कर जोरि राम सों रानी बोली अति मृदु बानी।
उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय मानी ॥
यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारिहु राज दुलारे।
भूरि भाग्य अनुराग सुनैना निज कर पायँ पखारे ॥
रचना अधिक पदिक के पीढ़न बैठारे सब भाई।
कंचन थारी मृदुल सुहारी परसी विविध मिठाई ॥
रुचि अनुरूप भूपसुत जेंवत पवन डुलावैं सासू।
बूझि बूझि रुचि व्यंजन परसैं बरनि न जाय हुलासू ॥
स्वाद सराहि पाय पुनि अँचये सखियन पान खवाये।
बैठे पहिरि पोशाक सखनयुत त्रिबिध सुगन्ध लगाये।

दो०—राज अयन सब चयन सत, राजत राजकुमार।
जिनकी हास विलास लखि, लाजहिं लाखनमार॥

छन्द

तेहि अवसर सुधि पाय सखी मुख लक्ष्मीनिधि की नारी।
नाम सिद्धि पर सिद्धि जासु गुण रूप सील उजियारी॥
भाग सुहाग भरी उठि सुन्दरि नव योवन मतवारी।
रसिकन रीति प्रीति परवीनी रतिहिं लजावन हारी॥
अतिगुनवान निधान रूपकी सबबिधिसुभग सयानी।
लक्ष्मीनिधि की प्राणपियारी निमि कुल की महरानी॥
अलबेली सरहज रघुबर की बड़ी सनेह सिंगारी।
प्रीतम प्रीति निवाहन हारो रामरूप रिझवारी॥
चंचल चपल चहूँ दिसि चितवत देखन को अतुराई।
भरी उमंग संग सखियन लै तुरत राम ढिग आई॥
वदन चंद अरविन्द लिये कर बिहँसत मन्दिर सोहैं।
राजकुँवर कर पकड़ि लाड़िली बोली तकि तिरछौहैं॥
चित के चोर किशोर भूप के बड़े चोर तुम प्यारे।
सुरति हमारि भुलाय साँवरे सासु समीप सिधारे॥
उलटी बात कहो जनि प्यारी आपन दोष दुराई।

तुमहीं रहिउ छिपाय छबीली सुनत हमारि अवाई ॥
हम आये तुम महलन भीतर तुमहिं न परयो जनाई ।
भलो सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जाइ समाई ॥
सुनत राम के बचन लाड़िली बोली मृदु मुसुकाई ।
तुमरे घर को रीति लालजू इत नहिं चलै चलाई ॥
सासु सुनयना के समीप महँ देत जवाब बनयना ।
पानि पकरि रघुनन्दनजी को गइ लेवाय निज अयना ॥
चारि सिंहासन दे तहँ आसन भरी हुलासन प्यारी ।
बारहिं बार निहारि वदन छबि बहु आरती उतारी ॥
मेलि सुकंठ मालती माला वसननि अतर लगायो ।
अंचल सो मुख पोंछि रामको निजकर पान खवायो ॥
जहँ रति रंभा सरिस सुन्दरी बैठीं किये सिंगारै ।
कोउ कुसुमन को करनफूल रचि कोउ कलँगीको उहारै ॥
ललित लवंग कपूर संग धरि कोउ सखि पान लगावैं ।
कोउकर पीकदान लिये ठाढ़ी कोउ सखि चमर डुलावैं ॥
कोउ जल शीतल भरे सुराही कोउ दर्पन दरसावैं ।
निज निज साज सजे सब प्यारी रघुबर सन्मुख भावैं ॥
कोउ जल तरही ताल तमूरा कोउ करताल बजावैं ।

कोउ सितार लै तार तारप्रति गूढ़ गतन दरसावैं।
कोउ उपंग मुरचंग मिलाव दै मृदङ्ग सुख थापें॥
कोउ लै बीन नवीन सुरनते मनहुँ बसीकर जापें।
कोउ मृगनैनी कोकिल बयनी पंचम राग अलापें॥
परत कानमें मधुर तान निज बिरहिन के जिय काँपें।
इमि अभिराम धाम सोभा लखि राजकुँवर अनुरागे॥
बातें करत सिद्धि सरहज सों परम प्रेमरस पागे।
जे मिमिराज नेवत सुनि आईं कोटिन राजकुमारी॥
राममिलन की बड़ी लालसा कहि न सकैं सुकुमारी।
तिन यह सुन्यो कि सिद्धि सदन में आये चारिहु भाई॥
तुरतहि तहँ पहुँची सब प्यारी जानि समय सुखदाई।
देखो राजकुँवरि सब आईं रामदरस की प्यासी॥
अति सन्मान कियो सब हीको सिद्धि सदन सुखरासी।
राम सुछबि देखन ते लागीं दृग आनँद जल बाढ़े॥
चख झुकपरे रूप सागर में कढ़हिं नहीं अब काढ़े।
मनिन मोर पर मोतिन कलँगी अलबेलि अति सोहैं॥
राजतियन को कौन चलै है मुनियन को मन मोहैं।
चिक्कन चिलकदार चुनवारी अलकें मुखपर छूटी॥

जोहत जहर चढ़त युवतिन को जड़ी न लागत बूटी।
लखि छबिवरकी श्याम सुन्दरकी भई मीनमुख सरकी॥
तरकी तनी कंचुकी करकी दरकी चूरी करकी।

दोहा—मनलोभा शोभा निरखि, भईं बिवश सुकुमारि।
चकित छकित सब रह गईं, तन मन दसा बिसारि॥

छन्द

जे तियमान अनूप रूप निज रहीं स्वरूप गुमानी।
ते लखि रामचन्द्रकी सुखमा बिनहीं मोल बिकानी॥
अति सुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागीं।
तहँ प्यारी गारी रघुबर को देन दियावन लागीं॥
एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो।
कानन सुन्यो काम अति सुन्दर की तुमको सोइ जायो॥
बोली सिद्धि सुनहु रघुनन्दन तुम हमार ननदोई।
एक बात तुमसों हम पूछैं लाल न राखहु गोई॥
होत ब्याह संबन्ध सबन को अपने जातिहि माँही।
निज बहिनी शृंगी ऋषि को तुम कैसे दियो बिबाही॥
की उनको मुनीश लै भाग्यो की वोई सँग लागीं।
एती बात बतावहु लालन तुम रघुवंस सभागीं॥

लखन कह्योयहसुनोलाड़िलीजेहिबिधिजहँलिखिदीना।
तहँ संयोग होत है ताको ब्याह तो कर्म अधीना ॥
कहँ हम राजकुँवर रघुवंसी कहँ विदेह बैरागी।
भयो हमार ब्याह तुम्हरे घर विधिगत गनै को भागी ॥
औरो एक हास उर आवै अचरज हैं सब काहू।
तुम तो हौ सिधि वे लक्ष्मीनिधि नारि नारि भो ब्याहू ॥
एक सखी कह सुनहु लालजी तुमहिं सकै को जीती।
ज़ाहिर अहै सकल जग माहीं तुम्हरे घर की रीति ॥
अति उदार करतूतिदार सब अवधपुरी की बामा।
खीर खाय पैदा सुत करतीं पति कर कछु नहिं कामा ॥
सखी बचन सुनि सब रघुनन्दन बोले मृदु मुसकाते।
आपनि चाल छिपावहु प्यारी कहहु आन की बातें ॥
कोउ नहिं जगमें मात पिता बिन बँधी देव की नीती।
तुम्हरे तौ महिते सब उपजैं अस हमरे नहिं रीती ॥
बोली चन्द्रकला तेहि अवसर परम चतुर सुकुमारी।
सिद्धि कुँवरिकी लहुरी भगिनी लक्ष्मीनिधिकी सारी ॥
लरिकाईं ते रह्यो लालजी तपसिन संग माहीं।
ये छल छन्द फन्द कहँ पाये सत्य कहो हम पाहीं ॥

की मुनि नारिनके सँग सीखे की निज भगिनी पास ।
खाटी मीठो स्वाद लालजी बिन चाखे नहिं भाष ॥
बोले भरत भली कह सजनी तुमहुँ तो अबै कुमारी ।
बरनहु पुरुष संग की बातैं सो कहँ सीखेहु प्यारी ॥
रहे मुनिन सँग ज्ञान सिखन को सो सब सुने सुनाये ।
कामिनिकाम कला अब सीखन हम तुम्हरे ढिग आये ॥
सिद्धि कह्यो तब सुनहु भरतजी ऐसी तुम न बखानौ ।
तुमरी तौ गिनती साधुन में लोक बात का जानौं ॥
भरत कह्यो तुम साँचि कहत हौ हम साधू परकाजी ।
ऐसी सेवा करो कामिनी जाते होय मन राजी ॥
आये अयन अपूरब योगी अस निज मन गुन लीजे ।
अधर सुधारस को दे भोजन अतिथिहिं पूजन कीजे ॥
एक सखी कह सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई ।
ऋषिमख राखन गये कुँवर ये तहँ हम अस सुधिपाई ॥
इनको सुन्दर देखि काम बस त्रिया ताड़का आई ।
सो करतूत न भई लालसों मारेहु तेहि खिसिआई ॥
बोले रिपुहन सुनहु भामिनी नाहक दोष न दीजै ।
जो करतूत बनी नहिं उनते सो हमसे भरि लीजै ॥

बिन जाने करतूति सबन को तुम्हारे घर भो ब्याहू।
सोउ पछिताव न रहै पियारी अब करि लेहु समाहू॥
जाके हित तुम रोष बढ़ावहु सो मति करहु उपाई।
वैसिनि सेवा में तुम्हरे हम हाजिर चारिउ भाई॥
सुनि बानी रिपुदमन लालकी बोली कोउ सुकुमारी।
कहँ पाई एती चतुराई कहिये लाल विचारी॥
की कहुँ मिली नारि गुनआगरि की गनिकनसँग कीनो।
तीनों भाइन ते तुम्हरे महँ लखियतु चिह्न नवीनो॥
रिपुहन कह भल कह्यो भामिनी भेदहिं भेदहिं जानैं।
गणिका नारिनहूँ ते सौगुण तुम्हैं अधिक हम मानैं॥
हमरो तुमरो चिह्न लाड़िली एकै भाँति लखाई।
ताते सखी हमारि तुम्हारी चाही अवसि सगाई॥
सुनि नव उक्ति युक्ति की बातैं बोली सिधि सुकुमारी।
सुनिये रसिक राय रघुनन्दन आनँद कन्द बिचारी॥
अति अभिराम कामहू मोहत मूरति देखि तुम्हारी।
कैसे बची होंगीं तुमसे अवधपुरी की नारी॥

यों कहि रही चुपाय सुन्दरी सिद्धि कुँअरि सुख अयना।
ताको हाथ पकरि रघुनन्दन बोले अति मृदुबयना ॥

दोहा—जस मर्य्यादा जगतकी, बाँधि दियो करतार।
राजा रंक यती सती, करत सोइ व्यवहार ॥

छन्द

अनुचित उचित विचारि लोग सब तहँ तस राखत भाऊ।
तुम तो अपने अस जानति हौ सबही केर सुभाऊ ॥
यह सुनि भरत लषण रिपुसूदन हँसे सकल दैतारी।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ अति भईं सुखारी ॥
यहि बिधि हँसि हँसाय रघुबर सों दै दिवाय मृदुगारी।
नाना भाँति मनोरथ मनके लगीं करन सब प्यारी ॥
कोउ सखि राम समीप जायके कहत कछू लगि कानै।
कमल कपोल परसि के प्यारी जन्म सुफल करि मानै ॥
कोइ निज कोमल कमल करन ते चरन कमल प्रभु चापैं।
बार बार हिय लाय लाड़िली दूर करैं तन तापैं ॥
रसिक शिरोमनी श्रीरघुनन्दन नवल नेह अभिलाखी।
जस जाके हिय रही लालसा तस तेहिकी रुचि राखी ॥
रघुनन्दन तब कह्यो सिद्धि सों जो तुम देहु दिनेसू।

तौ अब हम गमने जनवासे जहँ श्रीअवधनरेसू ॥
सुनि यह बानी रामकुँअरकी काँपि उठीं उर आली।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं बिरह बिहाली ॥
नेह बढ़ाय छकाय रूप रस आपु अवध जब जैहैं।
हम बिरहीन के प्राण लाड़िले कहौ कौन विधि रहिहैं॥
सुनि इमि आरत बैन तियन के तब करुना रस साने।
कोमल चित कृपालु रघुनन्दन प्रीति रीति भल जाने॥
बोले बचन भक्त भय भंजन सुनहु तियहु सब कोई।
अब मैं कहौं सुभाय आपनो तुम्हें न राखहु गोई॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक इनते और न भारी।
तिनहूँ ते तुम अधिक पियारी सुनु सिधि राजकुमारी॥
जो कोउ प्रीति करै मोरे पर होय सुजान अजानौं।
प्रान समान सदा तेहि राखौं औगुन एक न मानौं॥
निज निज प्रेमिन केरि जगतमें सुनियतु बड़ी बड़ाई।
तिन तिन में बिचारि जो देखो सब में एक खुटाई॥
कर्म धर्म अरु धीर बीरता जोग सिद्धि चतुराई।
ज्ञान ध्यान विज्ञान सुजनता राजनीति निपुनाई॥

इतने जीति सकैं नहिं मोहीं कोटिन करैं उपाई।
हार जाहुँ प्रेमी प्रानी ते तहाँ न मोर बसाई॥
तुम तो सबै प्रेम की मूरति सूरति की बलिहारी।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी मोहिं प्रानहुते प्यारी॥
तुम्हरे हिय अभिलाष आजु जो सो सब भाँति पुजैहौं।
लौकिक लाज बचाय लाड़िली तुमसे बिलग न ह्वैहौं॥
हम सब भाँति तुम्हारि साँवली तुम सब भाँति हमारी।
सत्य सत्य ये सत्य बचन मम मानहुँ राजकुमारी॥

दोहा—रघुनन्दन के बचन सुनि, खुलि गे कपट किवार।
बढ़्यो प्रेम सब त्रियन के, तनक न तनहिं सँभार॥

छन्द

पुनि धरि धीरज अली भलीविधि जोरि पंकरुह पानी।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं अति मृदुबानी॥
धन्य भाग हमरो रघुनन्दन हमते कोउ बड़ नाहीं।
बूड़त रहीं जगत सागर में राखि लीन्ह गहि बाहीं॥
हम नारी सब भाँति अनारी किये प्रीति मुदमोई।
राजकुमार रावरे के सम कीन्ह कृपा नहिं कोई॥

मति उपकार होत नहिं हमते जस तुम कीन्हेउ प्यारे ।
चन्द्र समान होहिं नहिं कबहूँ जुरहिं हजारन तारे ॥
जहँ जहँ जौन करम बस हमको जन्म बिधाता देहीं ।
तहँ तहँ रसिक राय रघुनन्दन तुमहीं मिलेहु सनेही ॥
बहु बिधि कोटिन करै जातना या तन छिन छिन छूटे ।
हमरी [illegible]री लगन लाड़िले कौनहु जन्म न टूटे ॥
सुनि बानी करुनारस सानी रघुबर अंतर जानी ।
सनमान्यो सब राजकुमारिन कहि कहि कोमल बानी ॥
सबसों बिदा माँगि रघुनन्दन अनुज सहित पगुधारे ।
निकसे मानहु सिद्धि महल ते चारु चन्द्र छबिवारे ॥
रानिहि पान खवावत साथहिं चली सिद्धि सुख ऐना ।
आये राजमहल महँ सिगरे जहँ श्रीमातु सुनैना ॥
चरन प्रनाम कीन्ह रघुनन्दन जोरि सरोरुह पानी ।
बिदा हेतु पुनि बचन सुनाये कहि अति कोमल बानी ॥
सुनि ये बैना सासु सुनैना भरे प्रेम जल नैना ।
रहौ कि जाहु न कछु कहिआवै भूलगई सब चना ॥
पुनि धरि धरि अनेक आभूषण जे बड़ मोलके जानी ।
अनुज [illegible]न जुत रामकुँवर को दीन्ह सुनैना रानी ॥

सब सन बिदा माँगि रघुनन्दन चले जनक ढिग आयें।
जथायोग करि मान बड़ाई बहुबिधि आनँद छाये ॥

दोहा—अस सब कहँ आनंद दे, गये अवध नृप पास।
कथा सुनाई नृपहिं सब, सुनि अति भयो हुलास ॥

* समाप्त *

पुस्तक मिलने का पता :—

श्री गंगा पुस्तकालय, गायघाट, बनारस

तथा

भार्गव बुकडिपो, चौक, बनारस

❁ सूचीपत्र ❁

पुस्तक	मूल्य
भार्गव स्टैण्डर्ड सचित्र डिक्शनरी (ऐंग्लो हिन्दी)	
भार्गव छोटी डिक्शनरी (ऐंग्लो-हिन्दी)	[illegible]
भार्गव सचित्र डिक्शनरी (हिन्दी-इङ्गलिश)	६।
भार्गव छोटी डिक्शनरी (हिन्दी-इङ्गलिश)	४)
भार्गव आदर्श हिन्दी शब्दकोश	१२)
रामायण मध्यम मूल (सचित्र)	८)
रामायण मूल गुटका १६ पेजी	३)
श्रीभगवद्गीता भाषा टीका	।=)
गीता भाषा	२॥)
दुर्गा सप्तशती (मूल)	॥।=)
नेताजी सुभाष (सचित्र)	३)
ज्ञानमाला	≡)
व्यापार गणित	=)
अर्जुन गीता	।-)
हनुमान चालीसा	=)
वृहत् होड़ाचक्रम्	≡)
दानलीला	=)
रामायण सुन्दर काण्ड गुटका	।)
हिन्दी प्राइमर	=)
पहाड़ा	=)
शिवचालीसा	=)
सन्ध्या	।)
चाणक्यनीति भाषा टीका	॥)
गोपालगारी	-)
विष्णुसहस्रनाम (सचित्र)	।)

प्रधान वितरक—श्री गंगा पुस्तकालय, गायघाट, बनारस ।